E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श

विवेक आत्रेय

एम.ए. (हिन्दी),

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

Paper Rcevied date

05/05/2025

Paper date Publishing Date

10/05/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15594012

IMPACT FACTOR 5.924

प्रस्तावना

भारतीय समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था, जाति, अस्पृश्यता शोषणपन, उत्पीडन के खिलाफ संघर्ष की लंबी प्रक्रिया रही है। प्राचीन समय से लेकर आज तक अन्याय और वर्चस्व के विरूद्ध सामाजिक परिवर्तन के लिए धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आंदोलन चलते रहे हैं। समय और काल परिवेश के अपने दबावों के फलस्वरूप यह आंदोलन तीव्रता और ठहराव से गुजरते हुए नया आकार पाता रहे है। सामाजिक परिवर्तनों की प्रक्रिया को अग्रसर करते हु तथा तमाम आयामों से गुजरते हुए दलित वर्ण-व्यवस्था का एक सशक्त आंदोलन और गभीर चिंतन है। हिंदू व्यवस्था की अमानवीयता का परिणाम इतना भयानक है कि आज भी भारतीय समाज हजारों जातियों में बंटा हुआ है। जातिगत भेदभाव आज भी उसी प्रकार जडे जमाए हुए हैं, जैसा कि हजारों वर्षों पहले था। दलित विमर्श इस जड को उखाड फेंकने के लिए कृतसंकल्प है। ओमप्रकाश वाल्मीकि के शब्दों में, भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था के आधार पर जो बंटवारा हुआ, उसकी ही देन है जातिभेद ।

अंग्रेजों के भारत पर आधिपत्य ने भारतीयों के प्रमोद और जडता को तोड़ दिया। उन्होंने गुलामी की छटपटाहट को अनुभव किया और देश को आजाद कराने के लिए करवट बदली। परिणाम स्वरूप जीवन संघर्ष बढ़ा और साथ ही साथ जातीय जीवन की भी जागृति हुई। भारतवासी संगठित होकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। तभी से नवजागरण की शुरुआत हुई मानी जाती है। सही मायने में 1857 के गदर के बाद ही भारत में नवजागरण की शुरुआत हुई।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

भारतवासियों में नवजागृति का संचय होने के बावजूद कई परिवर्तन आए । यह परिवर्तन किन्हीं एक क्षेत्र में नहीं बल्कि समाज के हर क्षेत्र में आया, चाहे वह क्षेत्र धार्मिक, राजनैतिक या फिर सामाजिक ही क्यों न हो । दलित विमर्श इन्हीं नवजागरणों का एक अंग है।

दलित का आशय :-

दलित शब्द का शाब्दिक अर्थ है जिसका दलन और दमन हुआ है, दबाया गया है, शोषित, उत्पीड़ित, सताया हुआ, अपेक्षित, घृणित, हतोत्साहित आदि। आधुनिक हिन्दी साहित्य में साहित्य में साहित्यकारों ने विमर्श का एक नवीन आकार निर्मित किया है जिसके अन्तर्गत दलित साहित्य को चिंतन का विस्तृत फलक प्रदान किया गया है। दलित विमर्श से अभिप्राय उस साहित्य से है, जिसमें दलितों ने स्वयं अपनी पीड़ा को रूपायित किया है, अपने जीवन संघर्ष में दलितों ने जिस यथार्थ को भोगा है, दलित विमर्श उनकी उसी अभिव्यक्ति का विमर्श है। यह कला के लिए कला नहीं बल्कि जीवन का और जीवन की जिजीविषा का विमर्श है। दलित चेतना का पूरा चित्रण दलित साहित्य में समाहित है। इसका सम्बन्ध सांस्कृतिक, संस्कारों एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से है। मूलतः भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था के आधार पर जो जातिगत बंटवारा हुआ है। यह पूर्णतः असमानता, वर्चस्व और शोषण पर आधारित है। दलित कोई एक रूपीय समाज नहीं है। इसकी अनेक परते है। दलित साहित्य के पीछे दलित चेतना की प्रमुख भूमिका है क्योंकि दलित चेतना से ही दलित स्वाभिमान जागता है। दलित अस्मिता की भावना बढ़ती है। इस साहित्य को सबसे पहले डॉ भीमराव अंबेडकर ने दलित साहित्य का नाम दिया था। इनकी अद्भुत सोच व चेतना का ही परिणाम है कि दलित साहित्य एक प्रमुख धारा बन चुका है। आधुनिक शब्दों में साहित्य समाज का अल्ट्रासाउण्ड है। सामाजिक मुद्दों को उजागर करना साहित्य का ही काम है। दलित साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना हिन्दी साहित्य | दलित साहित्यकारों ने इसी छुआछूत को मिटाने के लिए समाज और अपनी स्थिति की उपस्थिति दर्ज करने के लिए साहित्य का सृजन करना प्रारम्भ किया।

दलित विमर्श और हिन्दी साहित्य:-

दलित साहित्य स्वानुभूति और सहानुभूति का साहित्य है। स्वानुभूति तो सिर्फ उस व्यक्ति को ही हो सकता है जो दलित समाज में पैदा हुआ और सहानुभूति किसी के भी हृदय में पैदा हो सकती है। इसके लिए दलित समाज में पैदा होना जरूरी नहीं है। सहानुभूति किसी को भी पिघला सकती है। लेकिन स्वानुभूति तो सिर्फ उसी व्यक्ति को हो

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सकती है जो शूद्र वर्ण में पैदा होता है। साहित्य में किसी को भी अपने विचार अभिव्यक्त करने से रोका नहीं जा सकता । साहित्यकार किसी भी धर्म पर, जाति पर, मुल्क पर लिख सकता है। प्रेमचन्द के कथा साहित्य मैं 'दलित विमर्श' पर विचार करते हुए सुभाष चन्द्र ने लिखा है कि प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में समाज की वास्तविकता को जिस कुशलता के साथ अभिव्यक्त किया है वह भारत के हिन्द रचनाकारों के लिए आदर्श है। समाज के सभी वर्गों के चित्र मुंशी प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में उकेरे है। प्रेमचन्द की रचनाओं में दलितों के प्रति सहानुभूति, करूणा एवं संवेदना के साथ शोषण, अन्याय, उत्पीड़न से मुक्ति और मानवीय गरिमा व पहचान के लिए संघर्ष को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। प्रेमचन्द के उपन्यास कर्मभूमि, रंगभूमि, गोदान तथा कहानियाँ मंदिर, दूध का दाम, गुल्ली-डंडा, मंत्र, ठाकुर का कुआं, सद्गति आदि कहानियाँ दलित जीवन के विविध पक्ष तथा चित्र अभिव्यक्त करती है। दलित साहित्य सामाजिक यथार्थ के आधार पर खड़ा है। अतः आलोचना के सामाजिक यथार्थ के महत्व को स्थापित करते हुए हिन्दी दलित साहित्य के प्रमुख साहित्यकार एवं विद्वान आलोचक ओमप्रकाश बाल्मिकी कहते हैं सौंदर्यशास्त्र की विवेचना में सौंदर्य', कल्पना, 'बिम्ब' और 'प्रतीक' को प्रमुख माना है विद्वानों ने, जबकि सौंदर्य के लिए सामाजिक यथार्थ एक विशिष्ट घटक है। कल्पना और आदर्श की नींव पर खड़े साहित्य को ओमप्रकाश बाल्मिकि अप्रासंगिक मानते हैं। दलित साहित्य का जन्म सामाजिक यथार्थ के कारण ही हुआ हैं हिन्दी दलित साहित्य के आलोचकों में डॉ० धर्मवीर, ओमप्रकाश बाल्मिकि, कंवल भारती, जय प्रकाश कर्दम, डॉ० एन० सिंह, पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी, तेज सिंह, श्यौजराज सिंह, मोहनदास नैमिशराय, बेचैन, डॉ० कुसुम मेघवाल आदि ने हिन्दी की कई महत्वपूर्ण रचनाओं की समीक्षा की। ओमप्रकाश बाल्मिकि कृत 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र तथा तेजसिंह कृत 'आज का दलित साहित्य विशेष उल्लेखनीय है। 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र में ओमप्रकाश बाल्मिकि दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र के विकास के लिए अभिजात्य वर्ग द्वारा स्थापित पारम्परिक साहित्य के मूल्यांकन के मापदंडों से भिन्न सामाजिक यथार्थ के आधार पर नए प्रति निर्धारित किए है। संक्षेप में हिंदी साहित्य आलोचना परम्परागत शास्त्रीय सिद्धांतों को खारिज करते हुए सामाजिक यथार्थ के आधार पर निर्धारित मापदंडों को दृष्टि में रखकर दलित साहित्य की समीक्षा करती है। उचित समय पर हिन्दी दलित आलोचना के उद्भव विकास ने हिन्दी दलित साहित्य को स्थिरता एवं मजबती प्रदान की है।

प्रेमचन्द ने 'गोदान' उपन्यास में दलितों का विद्रोही रूप दर्शाया गया है। पंड़ित मातादीन सिलिया चमारिन के तन और मन पर कब्जा कर लेता है। पहले तो वह कहता है कि वह उसे ब्याहता की तरह रखेगा लेकिन जब सिलिया

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सहुआइन को होली में खरीदे हुए दो पैसे के रंग के बदले में चार पैसे का अनाज दे देती है तो मातादीन सहुआइन से अनाज वापस ढेर में डलवा लेता है और सिलिया को कहता है कि तू कौन होती है मेरे अनाज से देने वाली तब सिलिया को अपनी असली हैसियत का पता चलता है कि वह मातादीन की मात्र नौकर से ज्यादा कुछ नहीं।

तब सिलिया ने अनाज ओसाते हुए आहत गर्व से पूछा, 'तुम्हारी चीज़ में मेरा कुछ अख्तियार नहीं?" मातादीन आँखे निकाल कर बोला, 'नहीं, तुझे कोई अख्तियार नहीं है। काम करती है, खाती है। तो तू चाहे कि खा भी, लुटा भी, तो यह यहाँ होने वाला न होगा। अगर तुझे यहाँ न परता पड़ता हो, तो कहीं और जाकर काम कर मजूरों की कमी नहीं है। सेंत में नहीं लेते, खाना- कपड़ा देते है।

प्रमुख दलित साहित्यकार और रचनाएँ :-

आज भारत में अनेक भाषाओं में दलित साहित्य की रचना हो रही है। आजकल दलित साहित्य सबसे ज्यादा हिन्दी में लिखा जा रहा है। हिन्दी के दलित साहित्यकार दलित सरोकारों को बखूबी चित्रित कर रहे है। दलित साहित्य में अनुभव चिंतन की प्रधानता है। दलित लेखक बिम्ब प्रतिबिम्ब, प्रतीक और मिथक के सहारे नहीं टिका है बल्कि अनुभव और चिंतन पर आश्रित है।

ओम प्रकाश बाल्मिकि:-

सदियों का संताप, बस्स! बहुत हो चुका, जूठन, अब और नहीं (कविता संग्रह), सलाम, घुसपैठिये (कहानी संग्रह), दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, मुख्यधारा और दलित साहित्य (आलोचना) सफाई देवता (समाजशास्त्रीय अध्ययन) ।

मोहनदास नैमिशराय:-

अपने-अपने पिंजरे (हिन्दी दलित साहित्य की प्रथम आत्मकथा), आज बाजार बंद है, क्या मुझे खरीदोगे, जख्म हमारे (उपन्यास), आवाजें, हमारा जवाब (कहानी संग्रह), बाबा साहब अम्बेडकर जीवन परिचय (जीवनपरक आलोचनात्मक पुस्तक) ।

सूरजपाल चौहान:-

हैरी कब आएगा (कहानी संग्रह), तिरस्कृत (आत्मकथा), प्रयास, क्यों विश्वास करूं (कविता संग्रह), मातादीन भँगी (जीवनी) ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

कँवल भारती:-

तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती (काव्य संग्रह), **दलित विमर्श की भूमिका**, **दलित चिंतन और इस्लाम** (चिन्तन), **डॉ० अम्बेडकर बौद्ध क्यों बने**, **दलित धर्म की अवधारणा**, **सन्त रैदास एक विश्लेपण आदि ।**

डॉ० धर्मबीर

किनारे भी मझधार भी हीरामन (कविता संग्रह), **नई सदी में कबीर** (कबीर चिन्तन), **चमार की बेटी रूपा**, **जूठन का लेखक कौन है** (आलोचना) **आदि ।**

इसके अतिरिक्त श्यौराज सिंह बेचैन, **जय प्रकाश कर्दम**, **दयाचंद बटोही**, **सत्यप्रकाश**, **कर्मशील भारती**, **रजनी रानी मीनू तेज सिंह**, **उमराव सिंह जाटव**, **भगवान दास**, **सुभाष चन्द्र इत्यादि कई महत्वपूर्ण दलित लेखक अपनी रचनाओं से दलित साहित्य में निरन्तर वृद्धि कर रहे है।**

निष्कर्ष :-

भारत के आधुनिक समाज की यह विडम्बना ही कही जाएगी कि लोकतांत्रिक विचारों और मूल्यों तथा समानता और भाईचारे के प्रचार-प्रसार के बावजूद जातिगत भेदभाव और छुआछूत जैसी बीमारियाँ हमारे भारतीय समाज का अपरिहार्य अंग बनी हुई है। दलित साहित्यकारों ने इसी छुआछूत को मिटाने के लिए और समाज में अपनी स्थिति की उपस्थिति दर्ज करने के लिए साहित्य का सृजन करना प्रारम्भ किया। डॉ० अम्बेडकर का यही सपना था कि अपनी आर्थिक तंगी के बावजूद शिक्षा पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। आज के दलित साहित्यकारों के प्रेरणास्त्रोत है। हिन्दी दलित साहित्य को समृद्धि के शिखर तक पहुँचाने में ओमप्रकाश बाल्मिकि का सर्वाधिक योगदान रहा है। इसी कारण बाल्मिकी जी हिन्दी दलित साहित्य में सर्वोच्च स्थान के अधिकारी बने है। कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि दलित साहित्य के लिए आधुनिक काल एक स्वर्ण युग है, जिससे दलितों की प्रधानता है। दलित समाज में परिवर्तन की कामना ही दलित साहित्य का अंतिम लक्ष्य है

संदर्भ सूची ग्रन्थ :-

1. **एस० एल० सागर**, **हरिजन कौन और कैसे**, **सागर प्रकाशन मैनपुरी**, **उ०प्र०**, 2001, **पृष्ठ**
2. **राजमोण शर्मा**, **दलित चेतना की कहानियाँ**, **वाणी प्रकाशन**, **नई दिल्ली**, 2008, **पृष्ठ** 110

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

3. **हरियाणा ठाकुर**, **दलित साहित्य का समाज शास्त्र**, **भारतीय ज्ञानपीठ**, **नई दिल्ली**, 2010, **पृष्ठ** - 46
4. **हरदेव बाहरी**, **स्त्रोत**, **सुनीता कुशवाहा**, **उतर संस्कृति**, **दलित विमर्श और निराला**, **किशोर विद्या निकेतन**, **वाराणसी**, 2005, **पृष्ठ** - 24
5. **भोलानाथ तिवारी**, **स्त्रोत**, **अवधेश नारायण मित्र**, **उतर संस्कृति**, **दलित विमर्श और निराला**, **किशोर विद्या निकेतन**, **वाराणसी**, 2005, **पृष्ठ** 24
6. **यशस्वी रामकृष्ण दाते**, **महाराष्ट्र शब्दकोश**, **महाराष्ट्र कोश मंडल लि0 पुणे**, 1935, **पृष्ठ**
7. **किशोर डिजिटल देवो भव**, **प्रकाशन विभाग**, **भारत सरकार**, **दिल्ली**, 2005, **पृष्ठ**-7-9
8. **कँवल भारती**, **दलित साहित्य की अवधारणा**, **बोधिस्तव प्रकाशन**, **रामपुर**, **उ० प्र०**, 2006, **पृष्ठ** - 15